RNI No. MPHIN/2015/64451 डाक पंजीयन क्र. MP/IDC/1525/2022-2024 IPT डाक द्वारा प्रेषण प्रति शुक्रवार indianplasttimes@gmail.com

DPR No. N-193
www.Indianplasttimes.in

इंडियन प्लास्ट टाइम्स

■ INDORE ■ 02 AUGUST TO 08 AUGUST 2023 ■ प्रति बुधवार ■ वर्ष 08 ■ अंक 46 ■ पृष्ठ 8 ■ कीमत 5 रु.

Inside News

UPI के बाद अब दुनिया में जमेगी रुपये की धाक

Page 2

जुलाई में हुआ बंपर जीएसटी कलेक्शन

Page 3

कर्ज से होगी मेट्रो की राह आसान, न्यू डेवलपमेंट बैंक से मिले 1600 करोड़ रुपये
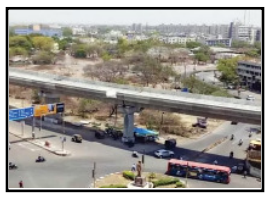
Page 4

editoria!

बच्चों के साथ अन्याय

बच्चों की तस्करी को आधुनिक युग की गुलामी कहा जाता है. यह एक ऐसी समस्या है, जिस पर तभी ध्यान जाता है जब कोई रिपोर्ट जारी होती है. हर साल 30 जुलाई को संयुक्त राष्ट्र मानव तस्करी के विरोध में एक दिवस मनाता है. इसी के आस- पास भारत की भी चर्चा हो जाती है. इस बार भी एक रिपोर्ट आयी है. एक गैर सरकारी संस्था ने वर्ष 2016 से 2022 के बीच 21 राज्यों के 262 जिलों में तस्करी के मामलों का अध्ययन किया गया है. रिपोर्ट कहती है कि उत्तर प्रदेश, बिहार और आंध्र प्रदेश से सबसे ज्यादा बच्चों की तस्करी हुई. राजधानी दिल्ली में कोविड महामारी के पहले और उसके बाद बच्चों की तस्करी के मामले में 68 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई है. रिपोर्ट में बताया गया है कि भारत में सबसे ज्यादा बच्चे होटलों और ढाबों पर काम करते हैं, उसके बाद ऑटोमोबाइल या ट्रांसपोर्ट उद्योगों और वस्त्र-निर्माण उद्योगों में. इससे पहले भी कई रिपोर्टें आयी हैं, जिनमें बताया गया था कि कोविड के बाद से दुनियाभर में बच्चों की तस्करी बढ़ी थी. भारत में राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड्स ब्यूरो के आंकड़ों के अनुसार वर्ष 2021 में हर दिन आठ बच्चे की तस्करी हुई थी. ज्यादातर बच्चों की तस्करी देश के भीतर ही होती है. लेकिन, विदेशों में भी बच्चों की बिक्री होती रही है. भारत से मुख्यत: खाड़ी के देशों और दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों में बच्चों की तस्करी होती रही है. संयुक्त राष्ट्र की संस्था यूएन ओडीसी की एक वैश्विक रिपोर्ट के अनुसार दुनियाभर में मानव तस्करी के शिकार लोगों में लगभग 20 फीसदी तादाद बच्चों की होती है. अफ्रीका के कुछ हिस्सों में यह संख्या बहुत ज्यादा है. भारत ने वर्ष 2025 तक बाल श्रम को जड़ से मिटाने का संकल्प लिया है. रिपोर्ट में कहा गया है कि पिछले एक दशक में सरकार और कानून पालन करवाने वाली एजेंसियों के प्रयासों तथा जागरूकता से बाल तस्करी पर काफी रोक लगी है. भारत की आर्थिक सफलता का लोहा दुनिया मानती है. ऐसे में स्कूलों की जगह बच्चों को स्कूलों की जगह सड़कों पर सामान बेचते और ढाबों में काम करते देखना दुखद है. सरकार और समाज की भागीदारी से ऐसे बच्चों की सहायता की व्यवस्था की जानी चाहिए. इस समस्या की जड़ में गरीबी है. बच्चे मजबूरी की वजह से तस्करी का शिकार हो जाते हैं. इसे ध्यान में रख एक व्यावहारिक और ठोस नीति बनायी जानी चाहिए ताकि बाल तस्करी की चर्चा एक रस्म अदायगी भर बन कर ना रह जाए.

कच्चा तेल 86 डॉलर प्रति बैरल के करीब, कीमत स्थिर

नई दिल्ली। आईपीटी नेटवर्क

अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की कीमतों में तेजी का रुख है। ब्रेंट क्रूड का भाव 86 डॉलर प्रति बैरल और डब्ल्यूटीआई क्रूड 83 डॉलर प्रति बैरल के करीब है। हालांकि, सार्वजनिक क्षेत्र की तेल एवं गैस विपणन कंपनियों ने पेट्रोल-डीजल के दाम में कोई बदलाव नहीं किया है। इंडियन ऑयल की वेबसाइट के मुताबिक बुधवार को दिल्ली में पेट्रोल 96.72 रुपये, डीजल 89.62 रुपये, मुंबई में पेट्रोल 106.31 रुपये, डीजल 94.27 रुपये, कोलकाता में पेट्रोल 106.03 रुपये, डीजल 92.76 रुपये, चेन्नई में पेट्रोल 102.63 रुपये और डीजल 94.24 रुपये प्रति लीटर की दर पर उपलब्ध है। अंतरराष्ट्रीय बाजार में हफ्ते के तीसरे दिन शुरुआती कारोबार में ब्रेंट क्रूड 0.88 डॉलर यानी 1.04 फीसदी की उछाल के साथ 85.79 डॉलर प्रति बैरल पर ट्रेंड कर रहा है। वहीं, वेस्ट टेक्सस इंटरमीडिएट (डब्ल्यूटीआई) भी क्रूड 0.87 डॉलर यानी 1.07 फीसदी की बढ़त के साथ 82.24 डॉलर प्रति बैरल पर कारोबार कर रहा है।

चीन के बाद अमेरिका की भी हालत पतली! फिच ने घटाई देश की टॉप रेटिंग

नई दिल्ली। एजेंसी

दुनिया के सबसे बड़ी इकॉनमी वाले देश अमेरिका को तगड़ा झटका लगा है। फिच (Fitch) ने अमेरिका की रेटिंग को AAA से घटाकर AA+ कर दिया है। 2011 के बाद अमेरिका की रेटिंग में पहली बार कटौती की गई है। देश की वित्तीय स्थिति और बढ़ते कर्ज को देखते हुए फिच ने ऐसा किया है। फिच ने अमेरिका को टॉप रेटिंग दे रखी थी लेकिन अब उसे घटा दिया गया है। फिच का कहना है कि अमेरिका में पिछले 20 साल में गवर्नेंस की स्थिति बदतर हुई है। फिच दुनिया की तीन बड़ी इंडिपेंडेंट एजेंसियों में से एक है जो किसी देश या कंपनी की क्रेडिट साख का आकलन करती है। हालांकि अमेरिका की वित्त मंत्री जेनेट येलेन ने इसे एजेंसी की मनमानी बताया है। उन्होंने कहा कि एजेंसी ने 2018 से 2020 के पुराने डेटा के आधार पर यह रेटिंग दी है।

दुनियाभर के इनवेस्टर्स निवेश के लिए क्रेडिट रेटिंग्स को बेंचमार्क मानते हैं। इससे पता चलता है कि किसी कंपनी या सरकार के इंस्ट्रूमेंट्स में पैसा लगाने में कितना जोखिम है। अमेरिकी सरकार के इंस्ट्रूमेंट्स में निवेश को सबसे सुरक्षित माना जाता है क्योंकि

इसकी इकॉनमी का साइज दुनिया में सबसे बड़ी है और उसमें दूसरे देशों के बजाय ज्यादा स्थिरता है। लेकिन इस साल सरकार की उधारी को लेकर भारी राजनीतिक गतिरोध देखने को मिला था। जून में सरकार डेट सीलिंग को बढ़ाकर 31.4 ट्रिलियन डॉलर करने में कामयाब रही लेकिन उससे पहले भारी राजनीतिक ड्रामा देखने को मिला। इसके चक्कर में अमेरिका पहली बार डिफॉल्ट होने के कगार पर पहुंच गया था।

क्या होगा असर

फिच के अमेरिका की क्रेडिट रेटिंग बढ़ाने का व्यापक असर हो सकता है। इससे मोर्टेगेज रेट्स पर असर हो सकता है। इससे इनवेस्टर्स अमेरिकी ट्रेजरीज को बेच सकते हैं। इससे यील्ड में बढ़ोतरी होगी जिससे सबकुछ महंगा हो सकता है। कई तरह के लोन के इंटरेस्ट रेट्स में इसे रेफरेंस माना जाता है। इससे पहले 2011 में एसएंडपी ने अमेरिका की क्रेडिट रेटिंग घटाई थी। Moody's Investors Service ने अमेरिका को 1917 में एएए रेटिंग दी गई थी जिसे परफेक्ट क्रेडिट रेटिंग माना जाता है। 2011 तक उसके पास यह रेटिंग बनी रही। फिच के रेटिंग घटाने के बाद अमेरिका ऑस्ट्रिया और फिनलैंड के बराबरी पर आ गया है लेकिन स्विट्जरलैंड और जर्मनी से नीचे हो गया है। एसएंडपी ने अमेरिकी रेटिंग को 2011 के बाद से AA+ पर रखा गया है जबकि मूडीज ने इसे AAA बनाए रखा है।

फिच का कहना है कि डेट सीलिंग बढ़ाने को लेकर बार-बार हो रहे राजनीतिक गतिरोध के कारण देश के फिस्कल मैनेजमेंट में दुनिया का भरोसा डगमगाया है। 2023 में सरकार का घाटा जीडीपी के 6.3 परसेंट पहुंचने का अनुमान है जो 2022 में 3.7 परसेंट था। साथ ही डेट टु जीडीपी रेश्यो भी बढ़ने की आशंका है। बढ़ती ब्याज दरों के कारण ब्याज महंगा हो गया है। 2017 में किए गए टैक्स कट्स की मियाद 2025 में पूरी हो रही है। इससे आगे दबाव और बढ़ सकता है।

कितना है कर्ज

फिच का कहना है कि फेड रिजर्व सितंबर में ब्याज दरों में एक और बढ़ोतरी कर सकता है। इससे रेटिंग्स पर और दबाव आ सकता है। फिच ने साथ ही आगाह किया है कि अगर सरकार खर्च से जुड़े मुद्दों और मैक्रोइकनॉमिक पॉलिसी का समाधान करने में नाकाम रहती है तो आने वाले दिनों में देश की रेटिंग और नीचे जा सकती है। 2033 तक देश की कुल कर्ज बढ़कर जीडीपी का 118 परसेंट पहुंचने का अनुमान है जो 2023 में 98 परसेंट है।

UPI के बाद अब दुनिया में जमेगी रुपये की धाक

खत्म होगी अमेरिका की बादशाहत

नई दिल्ली। एजेंसी

यूपीआई (UPI) का पूरी दुनिया में डंका बज रहा है। फ्रांस समेत दुनिया के कई देश इसे अपना चुके हैं और कई लाइन में खड़े हैं। अमेरिका में भी इसे अपनाने की मांग जोर पकड़ रही है। इस बीच भारत ने अमेरिका के स्विफ्ट (Society for Worldwide InteRank Fiancial Telecommunications) की तर्ज पर अपने इंटरनेशनल फाइनेंसिंग मेसेजिंग सिस्टम पर काम करना शुरू कर दिया है। दुनियाभर में एक देश से दूसरे देश में फंड्स और सिक्योरिटी को ट्रांसफर करने के लिए इसका इस्तेमाल किया जाता है। अपने इस सिस्टम के दम पर अमेरिका दुनिया में फाइनेंस की दुनिया पर राज करता है लेकिन जल्दी ही उसकी यह बादशाहत खत्म हो सकती है। भारत सरकार ने रुपये को अंतरराष्ट्रीय लेनदेन में बढ़ावा देने के लिए यह व्यापक प्लान बनाया है। स्विफ्ट जैसा सिस्टम भी उसकी योजना का हिस्सा है।

इस सिस्टम से द्विपक्षीय व्यापार को रुपये में सेटल करने में मदद मिलेगी।

सूत्रों के मुताबिक बैंकरों की एक एक्सपर्ट कमेटी इस बारे में विभिन्न विकल्पों पर विचार कर रही है। यह कमेटी अगले महीने अपनी रिपोर्ट सरकार को सौंप सकती है। इस कमेटी में एसबीआई, बैंक ऑफ बड़ौदा, बैंक ऑफ इंडिया और सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया समेत कई बैंकों के सदस्य शामिल हैं। एक बैंक अधिकारी ने कहा कि इंडिपेंडेंट फाइनेंसिंग मेसेजिंग सिस्टम के बारे में भी एक सुझाव आया है। बाइलेटरल ट्रेड एग्रीमेंट्स वाले देशों के साथ इसका यूज किया जा सकता है। कमेटी यह सुझाव देगी कि सिस्टम को कैसे ऑपरेशनल बनाया जा सकता है और इसमें क्या-क्या चुनौतियां हैं। इसके बाद आरबीआई समेत दूसरे स्टेकहोल्डर्स के साथ इस पर चर्चा होगी।

रुपये का बढ़ता रुतबा

एक अन्य अधिकारी ने कहा कि कमेटी आरबीआई के मौजूदा प्लेटफॉर्म एसएफएमएस (स्ट्रक्चर्ड फाइनेंशियल मेसेजिंग सिस्टम) पर विचार करेगी। हम यह देखेंगे कि इसे कैसे बढ़ाया जा सकता है। एसएफएमएस को स्विफ्ट की तर्ज पर बनाया गया है। इसे बैंकों के बीच कम्युनिकेशन सिक्योर करने के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है। आरबीआई ने 2022 में अपने विजन डॉक्यूमेंट में इस सिस्टम के दायरे को बढ़ाने की बात कही थी। सरकार ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर रुपये को बढ़ावा देने के लिए बैंकों से इंटरनेशनल ट्रेडिंग कम्युनिटी के साथ आउटरीच प्रोग्राम चलाने को कहा है। अब तक 22 देशों के 20 बैंक 92 स्पेशल रुपी वोस्ट्रो अकाउंट्स (SVAs) खोल चुके हैं।

आपके नोट के नंबर पर स्टार लगा है, रिजर्व बैंक ने क्या कहा है

नई दिल्ली। एजेंसी

क्या आपके पर्स में भी कई ऐसा नोट है, जिसमें सीरीज के बीच स्टार (*) मार्क लगा है? स्टार मार्क लगे नोट को देखकर लोगों के मन में सवाल उठ रहा है कि ये नोट असली है कि नहीं? लोगों की इन आशंकाओं को देखते हुए रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया ने बयान जारी किया है। आरबीआई ने कहा है कि स्टार मार्क लगे नोट पूरी तरह से एक लीगल नोट है। आरबीआई ने नोटिफिकेशन जारी कर बताया कि इन नोटों को किसी दूसरे नोट की जगह बदला गया है जिसकी वजह से उनपर स्टार लगाया गया है।

क्यों लगाया स्टार मार्क

आरबीआई ने कहा है कि स्टार लगे नोट में कोई परेशानी नहीं है और ये पूरी तरह से वैध है। केंद्रीय बैंक ने कहा कि स्टार नोट का चलन नोट की प्रिंटिंग को आसान बनाने और नोट बनाने की लागत को कम करने के लिए किया जाता है। इसकी शुरुआत साल 2006 में की गई थी। रिजर्व बैंक ने कहा कि सोशल मीडिया पर स्टार लगे नोट्स को लेकर काफी चर्चा हो रही है। रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया ने कहा कि ऐसे नोट्स पूरी तरह से वैध होते हैं। स्टार मार्क ऐसे नोट्स में लगाया जाता है जिसे गलत प्रिंट हुए नोट या फिर इस्तेमाल के लायक न रहने वाले नोट्स के बदले लाया जाता है। बीते कुछ दिनों से स्टार मार्क लगे नोट को लेकर खूब चर्चा हो रही है। जिसके बाद केंद्रीय बैंक ने संज्ञान लेते हुए आज जवाब दिया और नोटिफिकेशन जारी कर लोगों की आशंकाओं को दूर किया है। आरबीआई ने स्पष्ट किया कि स्टारमार्क वाले नोट पहचानकर्ता है कि यह एक रिप्लेस/रिप्रिंटेड बैंक नोट है।

केसर के सामने चांदी की चमक पड़ी फीकी

1 किलो खरीदने में चली जाएगी सालभर की सैलरी

नई दिल्ली। एजेंसी

गोल्ड-सिल्वर वर्क वाली मिठाईयां आपने खरीदी और खाई भी होगी। केसर वाली बर्फी भी चखी होगी। गोल्ड-सिल्वर वर्क जहां मिठाईयों को लग्जरी लुक दे देते हैं तो वहीं केसर स्वाद को बढ़ा देता है। लुक के मामले में भले ही सिल्वर वर्क वाली मिठाईयां जीत जाएं, लेकिन जब बात कीमत की आती है तो ये केसर के सामने कहीं नहीं टिक पाते। अकस्र लोगों के दिमाग में यही छवि बनी होती है कि सोने-चांदी की कीमत बाकियों से अधिक है, लेकिन जब आप कश्मीरी केसर की कीमत सुनेंगे तो खरीदने से पहले दस बार सोचेंगे। केसर के रंग के सामने चांदी की चमक फीकी पड़ जाएगी। केसर ने सिल्वर वर्क को पछाडकर अपनी डिमांड बढ़ा ली है। कश्मीरी केसर की कीमत चांदी से पांच गुना महंगी है।

चांदी से पांच गुना महंगी

जनकारी के मुताबिक कश्मीरी केसर चांदी वर्क को कड़ी चुनौती दे रहा है। 10 ग्राम सिल्वर वर्क की कीमत जहां 800 रुपये है तो वहीं शुद्ध केसर की कीमत 4950 रुपये प्रति 10 ग्राम है। वहीं 10 ग्राम चांदी की कीमत 730 रुपये है। स्वाद और उसकी खूबसूरती बढ़ाने में इस्तेमाल होने वाले केसर और चांदी की कीमत में 5 गुना से अधिक का

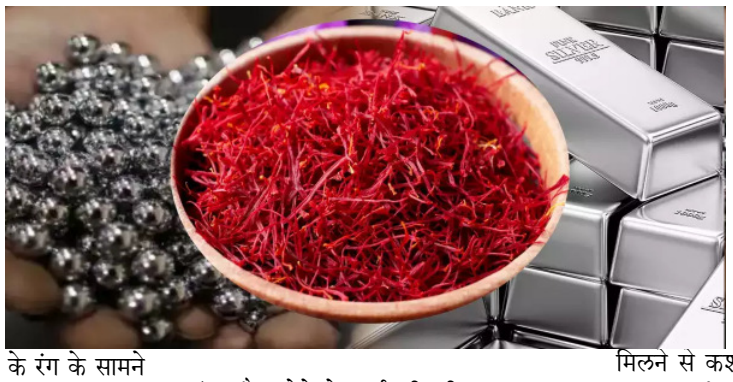

अंतर है। सोने के वर्क की कीमत 59000 रुपये प्रति 10 ग्राम है। 150 गोल्ड वर्क शीट के बॉक्स के लिए 52500 रुपये खर्च करने पड़ रहे हैं। हालांकि गोल्ड के मुकाबले चांदी और केसर का इस्तेमाल अधिक होता है। चांदी के वर्क के बाद असली चांदी की बात करते हैं। जहां चांदी 70 से 75 हजार रुपये किलो बिक रहा है तो वहीं कश्मीरी केसर 4 लाख 95 हजार रुपये प्रति किलो तक बिक रहा है। अमेरिका, कनाडा, ब्रिटेन में इस केसर की भारी डिमांड है। बीते एक साल में केसर के दाम 40 फीसदी से अधिक उछल चुके हैं।

5 लाख रुपये किलो

रिपोर्ट के मुताबिक डिमांड में बढ़त का असर इसकी कीमत पर देखने को मिल रहा है। कश्मीरी केसर को जीआई (उघ) टैग मिला हुआ है। यह दुनिया का एकलौता केसर है, जिसे जीआई टैग हासिल है। दुनियाभर के देशों में कश्मीरी केसर की भारी डिमांड है। जीआई टैग मिलने से कश्मीरी केसर की खेती करने वाले किसानों को बड़ा मुनाफा हुआ है। उघ टैग मिलने के बाद केसर की कीमत में और तेजी आई है। कश्मीर का खास केसर 2.8 लाख रुपये प्रति किलो से महंगा होकर 4.95 लाख रुपये प्रति किलो तक बिक रहा है। बीते एक साल में इसके दाम लगभग 40 फीसदी बढ़ चुके हैं।

गेल का नेट प्रॉफिट 51.5 परसेंट गिरा, पिछली तिमाही से 134 प्रतिशत बढ़ा

नई दिल्ली। एजेंसी

सरकारी गैस कंपनी गेल इंडिया लिमिटेड ने जून तिमाही के नतीजे घोषित कर दिए हैं। जून तिमाही में कंपनी का नेट प्रॉफिट पिछले साल की समान तिमाही के मुकाबले 51.5 परसेंट की गिरावट के साथ 1,412 करोड़ रुपये रहा। एक साल पहले जून तिमाही में कंपनी का प्रॉफिट 2,915 करोड़ रुपये रहा था। हालांकि तिमाही आधार पर कंपनी का प्रॉफिट 134% बढ़ा है। पिछली तिमाही में यह 604 करोड़ रुपये रहा था। इस दौरान कंपनी का ऑपरेशन से रेवेन्यू मामूली गिरावट के साथ 32,212 करोड़ रुपये रहा जो पिछली तिमाही में 32,843 करोड़ रुपये रहा था। पिछले साल पहली तिमाही में कंपनी का ऑपरेशन से रेवेन्यू 37,572 करोड़ रुपये रहा था। जून तिमाही में कंपनी का एबिटा तिमाही आधार पर बढ़कर 2,432.6 करोड़ रुपये हो गया। एबिटा मार्जन भी 660 बेसिस अंक बढ़कर 7.5 परसेंट हो गया। फाइनेंशियल ईयर की पहली तिमाही में कंपनी का प्रॉफिट बेफोर टैक्स 1,889 करोड़ रुपये रहा जो पिछले साल की समान तिमाही में 3,894 करोड़ रुपये रहा था। हालांकि पिछली तिमाही के मुकाबले इसमें 220 परसेंट तेजी आई है। मार्च तिमाही में कंपनी का पीबीटी 591 करोड़ रुपये रहा था। गैस मार्केटिंग एंड ट्रांसमिशन वॉल्यूम में तेजी और ट्रांसमिशन टैरिफ में तेजी से कंपनी का प्रॉफिट बढ़ा है। इस तिमाही के दौरान कंपनी का नेचुरल गैस ट्रांसमिशन वॉल्यूम सात परसेंट की तेजी के साथ 116.33 एमएमएससीएमडी रहा जो पिछली तिमाही में 108.23 एमएमएससीएमडी था। गैस मार्केटिंग वॉल्यूम भी दो परसेंट बढ़कर 98.84 एमएमएससीएमडी पहुंच गया जो पिछली तिमाही में 96.46 एमएमएससीएमडी था। एलएससी सेल्स भी 7% बढ़कर 247 टीएमटी पहुंच गया जो पिछली तिमाही में 230 टीएमटी थी। इसी तरह पॉलीमर सेल्स भी 37% की तेजी के साथ 162 टीएमटी पहुंच गया जो पिछले तिमाही में 118 टीएमटी थी। सोमवार को कंपनी का शेयर बीएसई पर 1.23 परसेंट की तेजी के साथ 119 रुपये पर बंद हुआ।

2000 रुपये के नोट को लेकर RBI ने दिया अपडेट

अब तक 3.14 लाख करोड़ रुपये बैंकों में वापस आएं

नई दिल्ली । एजेंसी

भारतीय रिजर्व बैंक ने मंगलवार को कहा कि 2,000 रुपये मूल्य के करीब 88 प्रतिशत नोट 31 जुलाई तक बैंकों में वापस आ चुके हैं। 31 जुलाई तक 2,000 रुपये के कुल 3.14 लाख करोड़ रुपये मूल्य के नोट चलन से वापस आ चुके हैं। RBI ने 19 मई को 2,000 रुपये मूल्य के नोट को चलन से बाहर करने की घोषणा की थी। उपभोक्ताओं को 30 सितंबर तक ये नोट बैंकों में जमा करने या वहां पर बदलने की सुविधा दी गई है। रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया ने 2000 रुपये के नोटों को सर्कुलेशन से बाहर करने का फैसला किया। हालांकि नोट चलन में जारी है। लोगों के इन नोटों को बदलने के लिए 30 सितंबर तक का वक्त दिया गया। चूंकि आरबीआई ने घोषणा से पहले से ही 2000 के नोटों का सर्कुलेशन काफीवकम कर दिया था, एटीएम से नोट पहले से कम निकल रहे थे। ऐसे में आरबीआई के फैसले बैंकों के बाहर बहुत भीड़ नहीं दिखी। आरबीआई ने करहा कि 31 जुलाई तक 2000 के 88 फीसदी नोट वापस आ चुके हैं। अब तक कुल 3.14 लाख करोड़ रुपये मूल्य के नोट चलन से वापस आ चुके हैं। जब आरबीआई ने 2000 रुपये के नोटों को बाजार से हटाने का फैसला किया, इस वक्त बाजार में 3.56 लाख करोड़ रुपये मूल्य के नोट चलन में मौजूद थे। इन नोटों का मूल्य 3.62 लाख करोड़ रुपये था। अब तक 3.14 लाख करोड़ के मूल्य के नोट वापस आ चुके हैं।

सरकारी खजाने के लिए आ गई अच्छी खबर

जुलाई में हुआ बंपर जीएसटी कलेक्शन 1.65 लाख करोड़ रुपये के पार हुआ आंकड़ा

नई दिल्ली। एजेंसी

अगस्त महीने की शुरुआत होते ही सरकारी खजाने के लिए अच्छी खबर आ गई है। जीएसटी कलेक्शन में बड़ा उछाल आया है। जीएसटी कलेक्शन जुलाई माह में सालाना आधार पर 11 प्रतिशत बढ़कर 1,65,105 करोड़ रुपये रहा है। वित्त मंत्रालय ने मंगलवार को यह जानकारी दी। अप्रत्यक्ष कर व्यवस्था लागू होने के बाद से पांचवीं बार जीएसटी संग्रह 1.60 लाख करोड़ रुपये से अधिक रहा है। वित्त मंत्रालय के बयान के अनुसार, ''जुलाई 2023 में सकल माल एवं सेवा कर (जीएसटी) संग्रह 1,65,105 करोड़ रुपये रहा। इसमें केंद्रीय जीएसटी 29,773 करोड़ रुपये, राज्य जीएसटी 37,623 करोड़ रुपये, एकीकृत जीएसटी 85,930 करोड़ रुपये (माल के आयात पर एकत्र 41,239 करोड़ रुपये सहित) है। इसके अलावा उपकर 11,779 करोड़ रुपये (माल के आयात पर एकत्र 840 करोड़ रुपये सहित) रहा।'' मंत्रालय के अनुसार राजस्व संग्रह जुलाई 2023 में पिछले साल के इसी महीने के मुकाबले 11 प्रतिशत अधिक रहा। जुलाई 2022 में यह 1.49 लाख करोड़ रुपये था। वर्ष 2023 में जुलाई

लगातार दूसरा महीना है जब बेची गई वस्तुओं तथा प्रदान की गई सेवाओं पर भुगतान किए गए करों से मासिक आधार पर राजस्व में वृद्धि हुई। यह जून महीने में 1.61 लाख करोड़ रुपये और मई में 1.57 लाख करोड़ रुपये था। अप्रैल में यह रिकॉर्ड 1.87 लाख करोड़ रुपये रहा था।

समीक्षाधीन महीने के दौरान घरेलू लेनदेन (सेवाओं के आयात सहित) से राजस्व सालाना आधार पर 15 प्रतिशत अधिक रहा। एन. ए. शाह एसोसिएट्स पार्टनर (अप्रत्यक्ष कर) पराग मेहता ने कहा कि मकानों, कारों, छुट्टियों और अन्य उपभोक्ता वस्तुओं के लिए उपभोक्ता खर्च में वृद्धि मासिक जीएसटी संग्रह में बढ़ोतरी का प्रमुख कारण रही। मेहता ने कहा कि मजबूत जीएसटीएन नेटवर्क ने शुरूआत में में ही कर चोरों का पता लगाना सुनिश्चित किया है। इसके जरिए विभाग नियमित आधार पर कर चोरी करने वालों और फर्जी चालान करने वाली संस्थाओं पर कार्रवाई कर रहा है। इसके अलावा जीएसटी परिषद द्वारा उद्योग के मुद्दों पर समय-समय पर स्पष्टीकरण से भी कानून को लेकर स्पष्टता आई है। समुचित अनुपालन के साथ जीएसटी संग्रह बढ़ा है।

डेलॉइट इंडिया पार्टनर एम.एस. मणि ने कहा कि ई-इनवॉइस कारोबार सीमा में कमी के साथ राज्यों में जीएसटी ऑडिट की संख्या बढ़ी जिससे कंपनियों में जीएसटी का अधिक पालन किया गया। इससे मासिक आधार पर जीएसटी संग्रह बढ़ा है और वह एक स्तर पर स्थिर होता जा रहा है। भारत में केपीएमजी के राष्ट्रीय प्रमुख (इंडायरेक्ट टैक्स) अभिषेक जैन ने कहा कि त्योहारों के कारण आने वाले महीनों में संग्रह बढ़ने की उम्मीद है।

सयाजी इंदौर के फूड फेस्टिवल में लखनवी ज़ायके का आनंद लें

इंदौर। आईपीटी नेटवर्क

सयाजी इंदौर के अखिल भारतीय रेस्तरां – साँची में मुगल परंपराओं की याद दिलाते, शाही खुशबू में लिपटे नवाबी व्यंजनों का स्वाद लें, जहाँ अदभुत मसालों, जड़ी -बूटियों, ड्राई फ्रूट्स से बने लाजवाब व्यंजन आपका इंतजार कर रहे हैं। साँची में उपलब्ध, गलावटी कबाब, माही दम कबाब, काकोरी कबाब, गोश्त पुलाव, कोरमा दम बिरयानी, मुर्ग बिरयानी, पनीर खुश्रंग, मुर्ग, अवधी कोरमा, घुटी दाल का शोरबा जैसे व्यंजन आपको ऐसा ज़ायका प्रदान करेंगे कि आप चटकारे लेते रह जाएंगे। यह फूड फेस्टिवल इंदौर के लिए खास फूड फेस्टिवल है क्योंकि यह आपके लिए कुछ यादगार लखनवी व्यंजन परोसने के लिए तैयार है। श्री गिरराज शर्मा, एसोसिएट एफएंडबी डायरेक्टर, सयाजी इंदौर ने बताया कि 'साँची को रिलॉन्च करने बाद, हमें खुशी है कि हम साँची में अपने दूसरे ग्रैंड फूड फेस्टिवल का आयोजन कर रहे हैं। यहाँ लज़ीज खानपान का जो संपूर्ण अनुभव आपको मिलेगा, वह वास्तव में अविस्मरणीय होगा। इंदौर के फूड लवर्स 28 जुलाई से 7 अगस्त तक इस फूड फेस्टिवल का आनंद ले सकते हैं।' साँची भारतीय-कुजीन का स्वाद प्रदान करने वाली एक खास जगह है जहाँ आपको खानपान का खास और अदभुत अनुभव प्राप्त होगा। यह स्टाइलिश, मॉडर्न रेस्तरां भारतीय और अंतरराष्ट्रीय व्यंजनों की लंबी सूची प्रदान करता है जिसे आपके खास अवसरों को यादगार बनाने के लिए ही तैयार किया गया है।

कोर सेक्टर की ग्रोथ पांच महीने की ऊंचाई पर, स्टील, सीमेंट के प्रोडक्शन में तेजी

नई दिल्ली । एजेंसी

मार्केट में डिमांड बढ़ने के संकेत मिल रहे हैं। खरीदारी भी बढ़ रही है। यही कारण है कि इकॉनमी के आठ प्रमुख माने जाने वाले कोर सेक्टर की ग्रोथ रेट जून में 8.2 फीसदी की तेजी के साथ पांच माह के हाई लेवल पर पहुंच गई। मई 2023 में ग्रोथ रेट 4.3 फीसदी थी। हालांकि सालाना आधार में कोर सेक्टर के ग्रोथ रेट में गिरावट आई है। पिछले साल जून में कोर सेक्टर की ग्रोथ रेट 13.1 फीसदी थी। सोमवार को कॉमर्स मिनिस्ट्री की ओर से जारी आंकड़ों से यह जानकारी सामने आई है।

कॉमर्स मिनिस्ट्री की ओर से जारी आंकड़ों के अनुसार जून में स्टील, कोयला, सीमेंट, रिफाइनरी प्रॉडक्ट्स, नेचरल गैस, फर्टिलाइजर और बिजली के उत्पादन में तेजी देखने को मिली है। आठ कोर इंडस्ट्रीज में कोल, क्रूड ऑयल, नेचरल गैस, रिफाइनरी प्रॉडक्ट्स, फर्टिलाइजर, स्टील, सीमेंट और बिजली के उत्पादन को मापा जाता है। आठ कोर इंडस्ट्रीज में कुल इंडस्ट्रियल प्रॉडक्शन में 40.27 फीसदी का योगदान होता है।

एक्सपर्ट की राय : इंडियन चैंबर ऑफ बिजनेस एंड कॉमर्स के सीईओ नितिन पंगोत्रा का कहना है कि जून में कोर सेक्टर की ग्रोथ रेट मई की तुलना करीब दोगुना हो गई। अच्छा संकेत है कि महंगाई में तेजी के बावजूद कोर सेक्टर में डिमांड रही, उत्पादन बढ़ा, जिसके कारण इन सेक्टरों का ग्रोथ रेट 8 फीसदी को पार कर गया है। इस नजरिये से देखा जाए तो जुलाई माह के कोर सेक्टर के ग्रोथ आंकड़े काफी महत्वपूर्ण होंगे। इस बात की तस्वीर साफ होगी कि बढ़ती महंगाई का असर इकॉनमी पर कितना पड़ रहा है।

ये रहे सेक्टर्स के हालात

-इस साल जून महीने में कोयला उत्पादन जून 2022 के मुकाबले 9.8 फीसदी बढ़ा है। अप्रैल से जून तिमाही के दौरान उत्पादन में 8.7 फीसदी का उछाल आया है।

-क्रूड ऑयल के प्रॉडक्शन में सालाना आधार पर में जून 2023 में 0.6 फीसदी की गिरावट आई है। अप्रैल से जून तिमाही के दौरान भी 2 फीसदी की गिरावट आई है।

-नेचरल गैस के उत्पादन में जून 2023 में बीते वर्ष के समान अवधि के मुकाबले 3.6 फीसदी का उछाल आया है। अप्रैल से जून तिमाही के दौरान 0.1 फीसदी उत्पादन बढ़ा है।

-पेट्रोलियम रिफाइनरी प्रॉडक्ट्स का प्रॉडक्शन जून 2023 में सालाना आधार पर 4.6 फीसदी के दर से बढ़ा है।

-फर्टिलाइजर का प्रोडक्शन 3.4 फीसदी के दर से बढ़ा है। सीमेंट के उत्पादन में 9.4 फीसदी का उछाल आया है।

कर्ज से होगी मेट्रो की राह आसान, न्यू डेवलपमेंट बैंक से मिले 1600 करोड़ रुपये

इंदौर। एजेंसी

इंदौर मेट्रो रेलवे को न्यू डेवलपमेंट बैंक से 1600 करोड़ रुपये ऋण मिल गया है। अब इस राशि से मेट्रो के निर्माण की राह आसान होगी। इंदौर में मेट्रो के एलिवेटेड हिस्से में न्यू डेवलपमेंट बैंक (एनडीबी) से ऋण लेने की प्रक्रिया लंबे समय से चल रही थी। 10 जुलाई को एनडीबी के प्रतिनिधियों ने ऋण स्वीकृति संबंधित दस्तावेजों पर हस्ताक्षर किए जा चुके हैं। एनडीबी से ऋण के रूप में 1600 करोड़ रुपये की राशि स्वीकृत की गई है। इसमें से इंदौर मेट्रो के लिए जैसे-जैसे जरूरत होगी, उपयोग किया जा सकेगा। इससे इंदौर मेट्रो के लिए कोच खरीदी की प्रक्रिया व एलिवेटेड हिस्से में निर्माण कार्य की राह आसान होगी। उल्लेखनीय है कि इंदौर में मेट्रो रेल परियोजना के काम के लिए 3200 करोड़ रुपये की दरकार है। इसमें से एनडीबी द्वारा 1600 करोड़ रुपये का ऋण स्वीकृत हो जाने के बाद अब मेट्रो के भूमिगत भाग में एशियन डेवलपमेंट बैंक से 1600 करोड़ रुपये का ऋण मिलने का भी इंतजार किया जा रहा है। उल्लेखनीय है कि अभी तक इंदौर में मेट्रो निर्माण के लिए अभी तक केंद्र व राज्य सरकार द्वारा 20-20 प्रतिशत राशि इक्विटी के रूप में मिली है। अभी तक इसी राशि को मेट्रो के निर्माण में खर्च किया जा रहा था।

75 कोचों की खरीदी पर खर्च होंगे 700 करोड़ रुपये

इंदौर मेट्रो को न्यू डेवलपमेंट बैंक से ऋण के रुप में स्वीकृत हुए 1600 करोड़ रुपये में से 550 करोड़ रुपये पावर सप्लाई, विद्युतीकरण, सब स्टेशन के निर्माण पर खर्च होंगे। वहीं ऋण की राशि में से 700 करोड़ रुपये से इंदौर में मेट्रो के लिए 75 कोच खरीदे जाएंगे। उल्लेखनीय है कि इंदौर में 25 सेट ट्रेनों का संचालन होगा। एक सेट में तीन कोच होंगे। ऋण राशि में से 350 करोड़ रुपये मेट्रो के एलिवेटेड हिस्से के निर्माण व अन्य कार्यों पर खर्च होंगे। इंदौर में सितंबर में होने होने वाले ट्रायल रन के लिए 3 कोच जल्द ही इंदौर पहुंचेंगे। ऐसे में इन तीन कोचों के लिए इंदौर मेट्रो रेल कार्पोरेशन लि. कंपनी एनडीबी से मिले ऋण की राशि में से 27 करोड़ रुपये खर्च करेगा।

जनवरी 2024 तक एशियन डेवलपमेंट बैंक से राशि मिल पाएगी

इंदौर मेट्रो के लिए न्यू डेवलपमेंट बैंक से 1600 करोड़ रुपये की राशि ऋण के रूप में मिलने के बाद अब भूमिगत भाग के निर्माण के लिए एशियन डेवलपमेंट बैंक (एडीबी) से 1600 करोड़ रुपये का ऋण मिलना शेष है। पिछले दिनों एडीबी के अधिकारियों ने इंदौर में मेट्रो के भूमिगत भाग का सर्वे किया था। इस मार्ग पर अलायमेंट व अन्य कार्य होना शेष हैं। ऐसे में संभावना है कि जनवरी 2024 तक एशियन डेवलपमेंट बैंक के साथ ऋण स्वीकृति के दस्तावेजों पर हस्ताक्षर हो सकेंगे।

PNB, BOI और ICICI से लिया है लोन तो अब देनी होगी ज्यादा ईएमआई

जान लीजिए कितना बढ़ेगा बोझ

नई दिल्ली। एजेंसी

डया से लोन ले रखा है तो आपको ईएमआई (EMI) अब बढ़ने वाली है। दरअसल इन तीनों बैंकों ने मार्जिनल कॉस्ट बेस्ड लेंडिंग रेट्स (MCLR) में इजाफा कर दिया है। बैंकों के इस फैसले से आप पर ईएमआई (EMI) को बोझ बढ़ जाएगा। बता दें कि होम लोन और ऑटो लोन समेत ज्यादातर कंज्यूमर लोन इसी एमसीएलआर से जुड़े होते हैं। आईसीआईसीआई बैंक, पंजाब नेशनल बैंक और बैंक ऑफ इंडिया ने अपने MCLR में बदलाव किया है। बैंकों वेबसाइटों के अनुसार, नई ब्याज दरें एक अगस्त से प्रभावी हो चुकी हैं।

PNB ने इतना किया इजाफा

पंजाब नेशनल बैंक ने MCLR को 8.10 फीसदी कर दिया है। एक महीने के टेन्योर के लिए MCLR को 8.20 फीसदी बैंक ने रखा है।तीन और छह महीने का MCLR अब 8.30 फीसदी और 8.50 फीसदी है। वहीं एक साल के लिए MCLR अब 8.60 फीसदी और तीन साल के लिए 8.90 फीसदी है।

बैंक ऑफ इंडिया ने किया इतना इजाफा

बैंक ऑफ इंडिया ने भी MCLR में बढ़ोतरी की है। बैंक ने ओवरनाइट लोन के लिए MCLR को 7.95 फीसदी और एक महीने के लिए 8.15 फीसदी कर दिया है। तीन महीने और छह महीने के लिए MCLR की दर को क्रमशः 8.30 फीसदी और 8.50 फीसदी रखा गया है। बैंक ने एक साल से लिए MCLR को 8.70 फीसदी और तीन साल के लिए 8.90 फीसदी तय किया है।

आईसीआईसीआई बैंक ने इतना इजाफा किया

आईसीआईसीआई बैंक ने सभी अवधि के लोन के लिए MCLR में 5 बेसिस प्वाइंट का इजाफा किया है। बैंक की वेबसाइट के मुताबिक, एक महीने की MCLR दर 8.35 फीसदी से बढ़कर 8.40 फीसदी हो गई है। तीन और छह महीने के लिए MCLR बढ़कर 8.45 और 8.80 फीसदी हो गई है। वहीं एक साल के लिए श्र्ष्टं को 8.85 फीसदी से बढ़ाकर 8.90 फीसदी कर दिया गया है।

क्या होता है MCLR

बता दें कि MCLR वह न्यूनतम ब्याज दर से होती है, जिसके नीचे कोई भी बैंक ग्राहकों को लोन नहीं दे सकता है। बैंकों के लिए हर महीने अपना ओवरनाइट, एक महीने, तीन महीने, छह महीने, एक साल और दो साल का MCLR घोषित करना अनिवार्य होता है। MCLR बढ़ने का मतलब है कि मार्जिनल कॉस्ट से जुड़े लोन जैसे- होम लोन, गाड़ियों के लोन पर ब्याज दरें बढ़ जाएंगी।

अमेरिका और यूरोप जाने वालों के लिए गुड न्यूज, घट जाएगा यात्रा का समय

नई दिल्ली। एजेंसी

विदेश यात्रा पर जाने वालों के लिए अच्छी खबर है। अमेरिका और यूरोप जाने के लिए अब उन्हें ज्यादा देर तक फ्लाइट में नहीं बैठना पड़ेगा। इस यात्रा में अब कम समय लगेगा। इसकी वजह यह है कि कई देशों के एविएशन रेगुलेटर्स ने अपनी एयरलाइन्स को अफगानिस्तान के ऊपर से उड़ान भरने की अनुमति दे दी है। अफगानिस्तान के ऊपर से फ्लाइट्स के गुजरने पर अगस्त 2021 में रोक लगा दी गई थी। तालिबान के अफगानिस्तान की सत्ता पर कब्जा करने के बाद एविएशन रेगुलेटर्स ने यह कदम उठाया था। लेकिन अमेरिका और यूरोपीय रेगुलेटर्स ने अपनी एयरलाइन कंपनियों को शर्तों के साथ अफगानिस्तान से गुजरने की अनुमति दे दी है। इससे ट्रैवल टाइम में आधे घंटे की बचत होगी।

यूएस फेडरल एविएशन एडमिनिस्ट्रेशन ने अमेरिकन एयरलाइन्स को काबुल फ्लाइट इन्फॉर्मेशन रीजन से उड़ान भरने की अनुमति दे दी है। यह पूरे अफगानिस्तान को कवर करता है। हालांकि विमानों को वहां 32,000 फीट से अधिक ऊंचाई पर उड़ान भरने को कहा गया है। इसी तरह यूरोपियन यूनियन एविएशन सेफ्टी एजेंसी ने भी अपने मेंबर स्टेट एयरलाइन्स को इसकी अनुमति दे दी है। एजेंसी ने कहा है कि विमानों को 32,000 फीट की ऊंचाई के ऊपर उड़ान भरनी चाहिए क्योंकि वहां अब भी जोखिम बना हुआ है। टीओआई को पता चला है कि कुछ यूरोपीय एयरलाइन्स अफगानिस्तान के ऊपर से टेस्ट फ्लाइट्स शुरू करने की योजना बना रही हैं। इनमें कई एयरलाइन्स की भारत से भी फ्लाइट्स चलती हैं।

क्या होगा फायदा

अगस्त 2021 के बाद से कोई भी फ्लाइट अफगानिस्तान के ऊपर से नहीं उड़ रही है। इससे यात्रा का समय आधा घंटा बढ़ गया था। पिछले साल जब रूस ने यूक्रेन पर हमला किया था तो विमानों के रूस के ऊपर से भी उड़ने पर पाबंदी लगा दी गई थी। अब अफगानिस्तान का रूट खुलने से विमानों को आसानी होगी और ट्रैवल टाइम में आधे घंटे की बचत होगी। इसके साथ ही एयरलाइन कंपनियों को फ्यूल पर भी बचत होगी।

ज्योतिषी बन गया AI बांच रहा सबका भविष्य

सेहत हो या शादी-पल भर में सामने होगा हर सवाल का जवाब

नई दिल्ली। एजेंसी

शादी, सेहत और सर्विस से जुड़े सवालों के जवाब जानने के लिए अब आपको ज्योतिषियों के पास जाने की जरूरत नहीं है। आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस (AI) के रूप में दुनियाभर में धमाल मचा चुका ChatGPT अब एस्ट्रोलॉजी के फील्ड में भी उतर आया है। किसी पेशेवर ज्योतिषी की तरह यह AI आपके हर सवाल के जवाब भी दे रहा है। दरअसल, कंपनी ने KundliGPT नाम से AI-पॉवर्ड वैदिक एस्ट्रोलॉजर चैटबॉट विकसित किया है। जहां किसी भी कस्टमर के बर्थ चार्ट की गणना करके AI उनके जीवन से जुड़े तमाम सवालों के जवाब देता है। आप इस चैटबॉट पर अपनी डिटेल डालने के बाद जीवन से जुड़े सवालों को पूछ सकते हैं। AI-पॉवर्ड यह वेबसाइट मशीन लर्निंग एल्गोरिद्म के जरिये कुंडली की गणना करती है और कस्टमर के सभी सवालों के जवाब देती है।

तकनीक और वैदिक ज्ञान का कमाल

KundliGPT कस्टमर को तकनीक और वैदिक ज्ञान को मिलाकर एक कमाल का कॉकटेल उपलब्ध कराता है। ग्रहों की दशा और कुंडली में उनकी उपस्थिति की गणना कर AI आने वाले समय का आकलन करता है और वैदिक ज्ञान के अनुसार यह बताता है कि किस ग्रह की दशा में किस तरह का प्रभाव पड़ेगा। इसके जरिये कस्टमर को अपने भविष्य के फैसले लेने में आसानी होगी। KundliGPT.com वेबसाइट पर अभी पैसों को लेकर कोई खुलासा नहीं हुआ है। लेकिन, भविष्य में हो सकता है इस पर कुछ चार्ज वसूला जाए। अभी तो यह वेबसाइट फ्री में रीडिंग दे रही है। इसका इस्तेमाल अभी बिना पैसों के किया जा सकता है. भविष्य में हो सकता है कि इस वेबसाइट पर कुंडली दिखाने के लिए कंपनी कुछ पैसे लेना शुरू कर दे।

SBI ने कर दिया कमाल

178 प्रतिशत बढ़ा मुनाफा, ऑटो लोन्स 1 लाख करोड़ रुपये के पार, एनपीए में गिरावट

नई दिल्ली। एजेंसी

भारतीय स्टेट बैंक यानी एसबीआई ने शुक्रवार को अपना पहली तिमाही का रिजल्ट जारी कर दिया है। पहली तिमाही में बैंक का रिजल्ट शानदार रहा है। मार्केट की उम्मीदों को पीछे छोड़ते हुए एसबीआई का शुद्ध मुनाफा पहली तिमाही में YoY 178% बढ़कर 16,884 करोड़ रुपये रहा। यह एसबीआई के लिए लगातार चौथी तिमाही में अब तक का सबसे अधिक शुद्ध लाभ रहा है। जून तिमाही में एसबीआई की शुद्ध ब्याज आय (NII) 24.7 फीसदी बढ़कर 38,905 करोड़ रुपये रही। वहीं, बैंक का घरेलू शुद्ध ब्याज मार्जिन 0.24 फीसदी बढ़कर 3.47 फीसदी रहा।

एनपीए में आई गिरावट

देश के इस सबसे बड़े सरकारी बैंक का ग्रॉस एनपीए पहली तिमाही में तिमाही दर तिमाही 2.78 फीसदी से गिरकर 2.76 फीसदी रह गया। नंबर्स के हिसाब से देखें तो ग्रॉस एनपीए एक साल पहले के 113,271.72 करोड़ रुपये की तुलना में 91,327.84 करोड़ रुपये रहा है। वहीं, प्रोविजंस एक साल पहले के 4,392 करोड़ और एक तिमाही पहले के 3,316 करोड़ की तुलना में 2,501 करोड़ रुपये का रहा।

1 लाख करोड़ के पार गए ऑटो लोन

पहली तिमाही में एसबीआई की क्रेडिट ग्रोथ 13.90 फीसदी रही है। घरेलू एडवांस में 15.08 फीसदी की ग्रोथ हुई है। बैंक के ऑटो लोन्स 1 लाख करोड़ के आंकड़े को पार कर गए। वहीं, एग्री और कॉरपोरेट लोन्स में क्रमशः 14.84 फीसदी और 12.38 फीसदी की ग्रोथ दर्ज हुई।

शेयर में गिरावट

हफ्ते के आखिरी कारोबारी दिन एसबीआई का शेयर (SBI Share Price) गिरावट के साथ ट्रेड करता दिखा। शुक्रवार दोपहर बैंक का शेयर 2.39 फीसदी या 14.10 रुपये की गिरावट के साथ 576.50 रुपये पर ट्रेड करता दिखा। इस शेयर का 52 वीक हाई 629.65 रुपये और 52 वीक लो 499.35 रुपये है। बीएसई पर कंपनी का मार्केट कैप 5,14,146.89 करोड़ रुपये दिखा।

आज से नहीं होगी नकली मेडिसिन की टेंशन, QR कोड खोलेगा दवा का हर राज

नई दिल्ली। एजेंसी

दवा असली है या नकली इसकी टेंशन हमेशा लगी रहती है। आप जो दवा मेडिकल स्टोर से खरीद रहे हैं, वो असली है कि नहीं अब इसकी टेंशन लेने की जरूरत नहीं है। 1 अगस्त से आप क्यूआर कोड स्कैन कर दवा असली है या नहीं ये खुद जान सकते हैं। केंद्र सरकार ने आज यानी 1 अगस्त से 300 दवाओं पर क्यूआर कोड लगाने का आदेश दे दिया है। सरकार ने ड्रग्स एंड कॉस्मेटिक्स एक्ट 1940 में संशोधन करते हुए फार्मा कंपनियों को अपने ब्रांड पर H2/QR लगाना अनिवार्य कर दिया है। भारत के ड्रग्स कंट्रोल जनरल ऑफ इंडिया (DCGI) ने फार्मा कंपनियों को सख्त निर्देश दिया है कि वो अपनी दवाओं पर बार कोड लगाएं। सरकार ने नकली दवाओं पर नकेल कसने के लिए यह फैसला लिया है। साल 2022 में ही केंद्र सरकार की ओर से नोटिफिकेशन जारी कर फार्मा कंपनियों को निर्देश दिया गया था। आज 1 अगस्त से इसे लागू कर दिया गया है।

इस बार कोड या क्यूआर कोड को स्कैन करके आप दवा के बारे में सबकुछ पता कर सकेंगे। एलिग्रा, शेलकेल, काल्पोल, डोलो और मेफ्टेल जैसी दवाओं पर आज से आपको क्यूआर कोड मिलेगा। सरकार ने इन कंपनियों को सख्त हिदायत दी है कि वो अपनी दवाओं पर बार कोड लगाए। सरकार के निर्देश को नहीं मानने पर फार्मा कंपनियों पर बड़ा जुर्माना लग सकता है। दवाओं पर लगने वाले इस क्यूआर कोड के जरिए लोगों को दवा से संबंधित जरूरी जानकारी जैसे कि दवा का प्रॉपर और जेनरिक नाम, ब्रांड का नाम, मैन्यूफैक्चरर की डिटेल, मैन्यूफैक्चरिंग की तारीख, एक्सपायरी डिटेल, लाइसेंस नंबर जैसी तमाम डिटेल मिल जाएंगी।

सरकार ने नकली दवा पर नकेल कसने के लिए यह फैसला लिया है। हाल ही में केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री मनसुख मांडविया ने कहा है कि नकली दवाओं को लेकर सरकार का रुख बहुत सख्त है। नकली दवा को लेकर सरकार 'बर्दाश्त नहीं करने' की नीति का पालन करती है। भारत निर्मित कफ सीरप के कारण मौत मामले में सरकार ने 71 कंपनियों को कारण बताओ नोटिस जारी करते के साथ 18 फार्मा कंपनियों का लाइसेंस रद्द कर दिया।

तमिलनाडु में 1,600 करोड़ रुपये निवेश करेगी फॉक्सकॉन?

जानिए कंपनी ने क्या कहा

नई दिल्ली। एजेंसी

फॉक्सकॉन (Foxconn) ने इस बात से इन्कार किया है कि उसने एक नई फैसिलिटी बनाने के लिए तमिलनाडु सरकार के साथ 1,600 करोड़ रुपये की एक डील की है। रॉयटर्स ने चीन की सिक्योरिटी टाइम्स में प्रकाशित एक रिपोर्ट के हवाले से यह खबर दी है। फॉक्सकॉन कॉन्ट्रैक्ट पर इलेक्ट्रॉनिक सामान बनाने वाली ताइवान की दिग्गज कंपनी है। रिपोर्ट के मुताबिक फॉक्सकॉन की सहयोगी कंपनी फॉक्सकॉन इंडस्ट्रियल इंटरनेट (Foxconn Industrial Internet) ने कहा कि उसने कोई इन्वेस्टमेंट डील साइन नहीं की है। इससे पहले कंपनी ने जुलाई में भी इसी तरह की अफवाहों पर सफाई देते हुए इससे इन्कार किया था।

फॉक्सकॉन की सहयोगी कंपनी एफआईआई इलेक्ट्रॉनिक डेवाइसेज, क्लाउड सर्विस इक्विपमेंट और इंडस्ट्रियल रोबोट्स बनाती है। सोमवार को तमिलनाडु की सरकार ने एक बयान में दावा किया था कि एफआईआई ने उसके साथ एक डील साइन की है। कंपनी की चेन्नई के करीब कांचीपुरम जिले में 1,600 करोड़ रुपये के निवेश से एक कैंपस बनाने की योजना है। तमिलनाडु सरकार का कहना था कि यह फैसलिटी चेन्नई के प्लांट से अलग होगी। चेन्नई में फॉक्सकॉन के प्लांट में 35,000 से अधिक लोग काम करते हैं। इस प्लांट में ऐपल का आईफोन एसेंबल किए जाते हैं।

चिप डील से किनारा

फॉक्सकॉन ने इससे पहले वेदांता के साथ मिलकर भारत में सेमीकंडक्टर मैन्युफैक्चरिंग के लिए ज्वाइंट वेंचर बनाने की योजना बनाई थी। लेकिन अंतिम समय में फॉक्सकॉन ने अपने कदम पीछे खींच लिए थे। अब वेदांता की दूसरी कंपनियों के साथ इस बारे में बातचीत चल रही है। भारत और दुनिया में सेमीकंडक्टर चिप का मार्केट तेजी से बढ़ रहा है। यही वजह है कि दुनियाभर के बड़े देश चिप की सप्लाई चेन पर कब्जा करना चाहते हैं।

इन राशियों के लिए लाभकारी है पुखराज रत्न, धारण करने से होगा फायदा

ज्योतिष शास्त्र में रत्नों को व्यक्ति के जीवन में महत्वपूर्ण बताया गया है। रत्न धारण करने से ग्रहों के दुष्प्रभाव से बचा जा सकता है। इन्हीं रत्नों में से एक पुखराज है। जिसे पीला नीलम भी कहा जाता है। इसे बृहस्पति का रत्न माना जाता है। बृहस्पति की शुभ स्थिति में पुखराज फलदायक साबित हो सकता है। जिन जातकों की कुंडली में बृहस्पति शुभ स्थिति में होता है। उन्हें पुखराज धारण करने पर धन, करियर, शिक्षा के साथ सम्मान मिलता है। जिस प्रकार पुखराज धारण करने से कई राशियों के जातकों की सुख-समद्धि में वृद्धि होती है। उसी प्रकार यह रत्न अगर किसी गलत व्यक्ति के हाथ में पड़ जाए तो नुकसान पहुंचा सकता है।

डॉ. संतोष वाधवानी
रत्न एवं वास्तु विशेषज्ञ, अंतर्राष्ट्रीय ज्योतिष एवं वास्तु एसोसिएशन प्रदेश प्रवक्ता

ज्योतिष शास्त्र के अनुसार, पुखराज राशियों के लिए बहुत शुभ माना जाता है। वृष, मिथुन, कन्या, तुला, मकर और कुंभ राशि वालों को पुखराज पहनने से बचना चाहिए।

मेष राशि का 9वां और 12वां घर देवगुरु बृहस्पति से प्रभावित होता है। पुखराज मेष राशि वालों के लिए समृद्धि की संभावना बढ़ाता है। इससे पेशे में उन्नति की संभावना बढ़ती है।

चंद्रमा कर्क राशि का स्वामी है। कर्क लग्न की कुंडली में बृहस्पति छठे और नौवें भाव में हो तो पुखराज को गुरु यंत्र के साथ धारण करना चाहिए। इससे सभी बाधाएं दूर हो जाएंगी।

धनु राशि में बृहस्पति पहले और चौथे घर का स्वामी है। यह स्थान शुभ है। यदि धनु राशि के जातक पुखराज धारण करें तो उन्हें शारीरिक, मानसिक और आर्थिक लाभ मिलता है।

देवगुरु बृहस्पति मीन राशि में पहल और दसवें घर का स्वामी है। यदि इस राशि के जातक पुखराज धारण करें तो करियर और आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

सावन में घर में लगाएं भगवान भोलेनाथ की तस्वीर तो इन बातों की रखें सावधानी

डॉ. आर.डी. आचार्य
9009369396
ज्योतिष एवं वास्तु विशेषज्ञ
इंदौर (म.प्र.)

भारतीय संस्कृति में देवी-देवताओं की पूजा एक प्राचीन परंपरा है। शिवजी को सर्वशक्तिमान देवता माना जाता है, जिनकी हर घर में पूजा की जाती है। सावन माह में घर में शिवजी की तस्वीर लगाना शुभ होता है। ऐसा करने से घर में शांति और समृद्धि बनी रहती है। हालांकि घर में शिव जी की तस्वीर या प्रतिमा लगाते समय इन बातों की सावधानी जरूर रखना चाहिए।

क्रोधित अवस्था की तस्वीर न लगाएं

घर में भगवान शिव की ऐसी तस्वीर नहीं लगाना चाहिए, जिसमें वे काफी ज्यादा क्रोधित अवस्था में दिखाई दे रहे हैं। इसके अलावा शिवजी की तांडव करते हुए कोई भी मुद्रा भी घर में नहीं लगाना चाहिए। इस महादेव का रौद्र रूप है और इसे घर में रखना शुभ नहीं होता है। घर में शांति के लिए शिव जी की ध्यान अवस्था में बैठी हुई तस्वीर रखना शुभ होता है। इससे घर में पॉजिटिव एनर्जी और परिवार में खुशहाली भी बनी रहेगी।

12 ज्योतिर्लिंगों की तस्वीर

आप घर में 12 ज्योतिर्लिंगों में से किसी एक की भी तस्वीर लगा सकते हैं। इससे भी घर में सकारात्मक ऊर्जा आती है। इसका अच्छा प्रभाव घर में रहने वाले सभी लोगों पर होता है।

उत्तर दिशा में लगाएं तस्वीर

भगवान शिव की तस्वीर घर में हमेशा ही उत्तर दिशा में ही लगाना चाहिए। वास्तु शास्त्र के अनुसार, कैलाश पर्वत भी उत्तर दिशा में है, इसलिए तस्वीर को भी उत्तर दिशा की ओर ही लगाना चाहिए। साथ ही घर में भगवान शिव की कोई टूटी-फूटी तस्वीर या शिवलिंग हो तो उसे नदी में प्रवाहित कर देना चाहिए।

ये 7 उपाय घुमा देंगे किस्मत का पहिया, बिगड़े काम बनने लगेंगे

किसी का जीवन सरल नहीं है। हर व्यक्ति को जीवन में कई बाधाओं का सामना करना पड़ता है। कुछ लोग इन बाधाओं को पार कर लेते हैं और कुछ नहीं। किसी जातक के जीवन में करियर, परिवार, रिश्ते और विवाह में कई अड़चन आ सकती है। ज्योतिष शास्त्र में इन बाधाओं को दूर करने के कई तरीके हैं। यदि आप इसे नियमित रूप से करते हैं तो कई समस्याओं से छुटकारा मिल सकता है।

करियर में तरक्की के लिए क्या करें?

हनुमान चालीसा का पाठ किया जाए तो करियर और जीवन में आने वाली बाधाएं दूर हो जाएंगी। आप प्रतिदिन स्नान करने के बाद हनुमान चालीसा का पाठ कर सकते हैं।

हर सुबह करें ये उपाय

प्रतिदिन सुबह उठकर कुछ देर तक अपनी हथेलियों को देखें। फिर अपने चेहरे पर रखें। धीरे-धीरे आपका भाग्य उदय होगा।

जीवन में सफलता पाने के लिए उपाय

रोज सुबह सूर्य को चीनी मिला हुआ जल चढ़ाएं। ऐसा करने से आप जीवन में हर काम में सफल होंगे।

लौंग अपने पास रखें

किसी भी जरूरी काम के लिए घर से निकलने से पहले चार लौंग हमेशा अपने पास रखें।

श्री रोशनी शर्मा
9265235662
हस्त रेखा एवं फेस रीडर (ज्योतिषाचार्य)

गायत्री मंत्र का जाप

प्रतिदिन गायत्री मंत्र का जाप करें। यह आपके जीवन को अधिक सहज बना होगा। इसके अलावा जब भी घर से बाहर निकले तो गुड़ खाएं। वहीं, अच्छे भाग्य के लिए चांदी के सिक्के अपने पास रखें।

इन पेड़ों की पूजा कर आप बदल सकते हैं अपना भाग्य! कुंडली के 9 ग्रहों से सीधा संबंध

हिंदू धर्म में प्रकृति पूजा का महत्व आदि काल से है. पेड़ों की पूजा करने के महत्व के बारे में शास्त्रों में भी उल्लेख मिलता है. मान्यताओं के अनुसार, पेड़-पौधों की पूजा करने से शुभ लाभ की प्राप्ति होती है. यह भी कहा जाता है कि यदि शास्त्रों के अनुसार पेड़ों की पूजा की जाए तो कुंडली में ग्रह स्थिति मजबूत होती है, जिससे संकटों का समाधान होता है. यहीं नहीं, पेड़ों की पूजा से ग्रहों की स्थिति को बदला भी जा सकता है. ज्योतिष शास्त्र के अनुसार, कुंडली में नौ ग्रह अपने अलग-अलग प्रभाव से व्यक्ति को प्रभावित करते हैं, लेकिन इन ग्रहों के दुष्प्रभाव को कम करने के लिए अलग-अलग पेड़ पौधों की पूजा करने से स्थिति मजबूत होती है, जिससे कई तरह के लाभों की प्राप्ति होती है. ज्योतिषाचार्य ने बताया कि शास्त्रों में ग्रहों और पेड़ों के संबंधों का उल्लेख किया गया है. बताया गया है कि किस तरह से पेड़ों की पूजा से कुंडली में ग्रहों की स्थिति को परिवर्तित किया जा सकता है. कुंडली में जो ग्रह कमजोर हो उससे जुड़े पेड़ की यदि पूजा की जाए तो ग्रह के प्रभाव में अंतर प्रतीत होगा.

9 ग्रहों के अनुसार इन पेड़ों की करें पूजा

सूर्य: कुंडली में अगर सूर्य की स्थिति कमजोर है तो पीपल और आम के पेड़ की पूजा से सूर्य कुंडली में मजबूत होता है. लेकिन रविवार के दिन पीपल की पूजा नहीं करनी चाहिए.

चंद्रमा: अगर कुंडली में चंद्रमा कमजोर स्थिति में हैं तो आपको नीम, बरगद की पूजा करनी चाहिए. इससे चंद्रमा की स्थिति कुंडली में मजबूत होती है और मानसिक रोग भी दूर होते हैं.

मंगल: गेहूं का पौधा और गुलमोहर की पूजा करने से मान सम्मान में वृद्धि होती है और त्वचा रोग समाप्त होते हैं. कुंडली में मंगल की स्थिति भी मजबूत होती है. ऐसे में वाद विवाद कम होते हैं और समाज में अच्छी छवि बनती है.

बुध: कुंडली में जिन लोगों का बुध कमजोर होता है, वे शारीरिक परेशानियों का सामना करते हैं. ऐसे में अपामार्ग के पौधे की पूजा करने से बुध ग्रह मजबूत होता है, जिससे स्वास्थ्य लाभ मिलता है.

गुरु: अगर कुंडली में गुरु ग्रह कमजोर है तो केले के पौधे, बरगद वृक्ष और बबूल वृक्ष की पूजा करनी चाहिए. ऐसा करने से ज्ञान में वृद्धि होती है और तरक्की के मार्ग भी खुल जाते हैं.

शुक्र: गुलाब और चंपा के पौधे की पूजा करने से कुंडली में शुक्र मजबूत होता है. शुक्र के मजबूत होने से आय में वृद्धि होती है और घर में सुख शांति का आगमन होता है.

शनि: कुंडली में शनि के दोष समाप्त करने के लिए पीपल वृक्ष, शमी वृक्ष, जामुन और नींबू के पौधे की पूजा करनी चाहिए. ऐसा करने से कुंडली में शनि दोष समाप्त होता है और मनचाहे फल की प्राप्ति होती है.

राहु: बरगद वृक्ष और कौवा के पौधे की पूजा करने से कुंडली में राहु की स्थिति मजबूत होती है, जिससे शुभ फल की प्राप्ति होती है.

केतु: अगर आपकी कुंडली में केतु कमजोर है, तो कुशा के पौधे की पूजा से कुंडली में केतु मजबूत होगा, जिससे आपके जीवन में कई उपलब्धियां हासिल होंगी.

ऐसे जानिए पूजा विधि

अगर आप भी अपनी कुंडली में ग्रहों की स्थिति को अच्छी करने के लिए इन पेड़ पौधों की पूजा करना चाहते हैं तो आप उत्तराखंड के उधम सिंह नगर के वरिष्ठ आचार्य पंडित अरुणेश मिश्रा से मोबाइल नंबर 9412994930 पर संपर्क कर जानकारी ले सकते हैं.

विदेशी संस्थागत निवेशकों का भारतीय स्टॉक (पूंजी) बाजार में बढ़ रहा है निवेश

किसी भी देश के लिए स्टॉक (पूंजी) बाजार में हो रहा उतार चढ़ाव उस देश की अर्थव्यवस्था में भविष्य में होने वाले परिवर्तनों को दर्शाता है। यदि स्टॉक बाजार में तेजी दिखाई देती है तो इसका आशय सामान्यतः यह लगाया जाता है कि उस देश की अर्थव्यवस्था में सुधार दृष्टिगोचर है। इसके विपरीत यदि स्टॉक बाजार नीचे की ओर जाता दिखाई देता है तो इसका आशय यह लगाया जाता है कि निकट भविष्य में उस देश की अर्थव्यवस्था में कुछ समस्याएं आने वाली हैं। भारत की अर्थव्यवस्था में आज लगभग किसी भी प्रकार की कोई समस्या नहीं है, जिसके चलते भारत का स्टॉक बाजार नित नई ऊंचाईयां हासिल करता दिखाई दे रहा है। इसके ठीक विपरीत अमेरिका, चीन, रूस, जापान, जर्मनी, ब्रिटेन, आदि जैसे लगभग सभी विकसित देशों में आज आर्थिक समस्याओं का अंबार लगा है। मुद्रा स्फीति की समस्या को तो कई विकसित देश अभी भी सम्हाल नहीं पाए हैं। विदेशी निवेशक संस्थानों का भरोसा इसी के कारण भारतीय अर्थव्यवस्था पर वापिस बहाल हुआ है और औसतन प्रतिदिन 100 करोड़ रुपए के शेयर विदेशी संस्थागत निवेशक भारतीय स्टॉक बाजार में खरीद रहे हैं। वर्ष 2014 के बाद से भारतीय स्टॉक बाजार ने जो रफ्तार पकड़ी हैं, वह भारतीय

स्टॉक बाजार के इतिहास में पहिले कभी भी नहीं रही है। 7 अप्रेल 2014 को भारत में सेन्सेक्स 22, 343 अंकों पर था, जो 26 मई 2014 को 24,700 के आंकड़े को पार कर गया। वर्ष 2019 में चुनावी बिगुल बजने से पहले 10 अप्रेल 2019 को सेन्सेक्स 38,600 अंकों पर पहुंचा। मोदी सरकार के पहले कार्यकाल में स्टॉक बाजार ने लगभग 73 प्रतिशत यानी 16, 250 अंको से ज्यादा की छलांग लगाई। वर्ष 2020 में कोरोना महामारी पर नियंत्रण स्थापित करते हुए भारत ने पूरी दुनिया के पटल पर सफलता की एक कहानी लिखी। वर्ष 2020 में भारतीय स्टॉक बाजार दुनिया के बाजारों के मुकाबले निवेशकों को 15 प्रतिशत से अधिक का रिटर्न प्रदान किया। मौजूदा समय में भारत में सेन्सेक्स 65,000 के पार पहुंच गया है। मोदी सरकार के दूसरे कार्यकाल में सेन्सेक्स ने 66 प्रतिशत यानी 25,500 अंकों की तेजी दिखाई है। बम्बई स्टॉक एक्स्चेंज का मार्केट केप 7 अप्रेल 2014 को 74.51 लाख करोड़ रुपए था, जो वर्तमान में बढ़कर 294.11 लाख करोड़ रुपए पर पहुंच चुका है। इस प्रकार, इस दौरान निवेशकों की झोली में 219.59 लाख करोड़ रुपए आ चुके हैं। भारत में पिछले 40 दिनों में सेन्सेक्स ने लगभग 1800 अंकों की छलांग लगाई है।

भारतीय स्टॉक बाजार में वर्ष 2014 से वर्ष 2023 के दौरान विदेशी निवेशकों की अहम भूमिका रही है। विदेशी संस्थागत निवेशकों ने 4,900 करोड़ अमेरिकी डॉलर से अधिक का निवेश भारतीय स्टॉक बाजार में किया है। अप्रेल 2023 से जुलाई 2023 तक विदेशी संस्थागत निवेशकों ने 1500-1600 करोड़ अमेरिकी डॉलर का निवेश भारतीय स्टॉक बाजार में किया है। जो विदेशी संस्थागत निवेशक जनवरी-फरवरी 2023 में भारतीय कम्पनियों के शेयर बेचकर चीन की कम्पनियों के शेयर खरीद रहे थे परंतु अब मार्च- अप्रेल 2023 के बाद से पुनः वे भारतीय कम्पनियों के शेयर खरीदने लगे हैं। पिछले 9 वर्षों में से केवल 2 वर्ष ही ऐसे रहे हैं जिनमे विदेशी संस्थागत निवेशकों का भारतीय स्टॉक बाजार में शुद्ध रूप से निवेश ऋणात्मक रहा है।

विदेशी संस्थागत निवेशक आज भारतीय स्टॉक बाजार की ओर इतना अधिक आकर्षित क्यों हो रहे हैं। एक तो भारतीय स्टॉक बाजार ने अपने निवेशकों को बहुत अधिक रिटर्न प्रदान किए हैं। जब हम इस रिटर्न की तुलना अन्य देशों के पूंजी बाजार से करते हैं तो ध्यान में आता है कि विश्व के अन्य कई देशों के स्टॉक बाजार में निवेश पर लगभग 8-9 प्रतिशत का रिटर्न मिलता है, जबकि भारतीय स्टॉक बाजार में निवेश पर लगभग 15-16 प्रतिशत का रिटर्न मिलता है । इसी प्रकार, अमेरिका में बांड्ज में निवेश पर केवल 2-3 प्रतिशत अथवा अधिकतम 5 प्रतिशत का रिटर्न मिलता है और भारत में बैंक में सावधि जमाराशि पर लगभग 6 प्रतिशत का रिटर्न मिलता है, ऋण, कामर्शियल

पेपर, बांड्ज आदि पर भी लगभग 6 से 7.5 प्रतिशत तक रिटर्न मिलता है। सोने के निवेश पर भी रिटर्न लगभग 7 से 8 प्रतिशत का ही रहता है, और रियल इस्टेट में निवेश पर लगभग 9 से 11 प्रतिशत तक का रिटर्न मिलता है। जबकि भारतीय स्टॉक बाजार में वर्ष 1980 में सेन्सेक्स 100 अंकों पर था जो आज 67,000 अंकों पर आ गया है। अतः स्टॉक बाजार ने प्रतिवर्ष औसत 16 प्रतिशत की वार्षिक चक्रवृद्धि दर से अधिक की रिटर्न निवेशकों को दिलाई है। लम्बी अवधि में सामान्यतः केवल स्टॉक बाजार ही मुद्रा स्फीति से अधिक की वृद्धि दर देता आया है।

दूसरे, पिछले लगभग 10 वर्षों के दौरान भारत की आर्थिक वृद्धि दर में अतुलनीय सुधार हुआ है। हाल ही के वर्षों में भारत में बुनियादी ढांचा को विकसित करने में बहुत अधिक काम सम्पन्न हुआ है और अब भारतीय बुनियादी ढांचा विकसित देशों के बुनियादी ढांचे से टक्कर लेता दिखाई दे रहा है। इसी प्रकार के प्रयास अब विनिर्माण क्षेत्र को विकसित करने के लिए भी किए जा रहे हैं। ऑटो उद्योग के लिए 'चिप' निर्माण करने वाली इकाईयों को अब भारत में ही स्थापित किया जा रहा है, जबकि अभी तक भारत में चिप का आयात किया जा रहा था। सुरक्षा के क्षेत्र में भी विभिन्न उत्पादों का आयात किया जाता था परंतु अब भारत में ही विनिर्माण इकाईयों की स्थापना की जा रही हैं और भारत इस क्षेत्र में आत्म निर्भर बनता जा रहा है। मोबाइल विनिर्माण इकाईयों की स्थापना भारत में हुई है, भारतीय ऑटो उद्योग तो अब विश्व में नम्बर एक उद्योग बनने की ओर आगे बढ़ रहा है। विश्व की कई बड़ी बड़ी बहुराष्ट्रीय कम्पनियां अपनी विनिर्माण इकाईयां भारत में स्थापित करती जा रही हैं। कई देशों के साथ भारत के मुफ्त व्यापार समझौते सम्पन्न हो रहे हैं तथा कुछ देशों के साथ विदेशी व्यापार भी भारतीय रुपए में सम्पन्न किया जाने लगा है, जिससे अमेरिकी डॉलर पर निर्भरता कम हो रही है। रूस, ईरान, श्रीलंका, बांग्लादेश आदि कई देशों के साथ रुपए में विदेशी व्यापार प्रारम्भ हो चुका है। अंतरराष्ट्रीय बाजार में रुपए की कीमत बढ़ रही है।

सरकार के फैसले के बाद गैर-बासमती चावल के गिरे दाम, विदेशों में अटकी पेमेंट

नई दिल्ली। एजेंसी

केंद्र सरकार की ओर से गैर-बासमती चावल के निर्यात पर लगाई गई रोक से कारोबारियों की मुसीबत बढ़ गई है। आलम यह है कि विदेश में चावल सप्लाई करने वाले कारोबारियों की पेमेंट रुक गई है। दिल्ली में सप्लाई ज्यादा होने पर गैर-बासमती चावल के दाम भी गिर गए हैं। हालांकि, कारोबारियों का दावा है कि आने वाले दिनों में फिर से गैर-बासमती चावल के दाम बढ़ सकते हैं।

दिल्ली ग्रेन मर्चेंट असोसिएशन के सेक्रेटरी सचिन शर्मा ने बताया कि देश में कुल पैदावार का 40 प्रतिशत गैर-बासमती चावल विदेशों में निर्यात होता है, लेकिन सरकार की ओर से अचानक लिए गए फैसले से व्यापारियों को भारी नुकसान उठाना पड़ रहा है। दरअसल, दिल्ली में कई व्यापारी यूएसए, कनाडा समेत कई देशों में गैर-बासमती चावल की सप्लाई करते हैं। व्यापारी अडवांस में चावल सप्लाई करने की बुकिंग कर लिए हैं, लेकिन सरकार के लगाए गए प्रतिबंध से सप्लाई रुक गई, जिससे विदेशों के व्यापारी बिना सप्लाई पुराना पेमेंट नहीं कर रहे हैं। इससे व्यापारियों की परेशानी बढ़ गई है। चावल कारोबारी सुरेंद्र गर्ग ने बताया कि सरकार के फैसले से देश में गैर-बासमती चावल के रेट में कमी आई है। हर वैरायटी के चावल में दो से तीन रुपये कम हुए हैं। हालांकि, संभावना है कि आने वाले दिनों में फिर तेजी आ सकती है।

गैर-बासमती चावल की 60 प्रतिशत खपत देश में ही

चावल कारोबारियों का कहना है कि नॉन बासमती चावल मोटे अनाज को कहा जाता है। इसकी अलग-अलग वैरायटी होती हैं, जिसमें परमल चावल, सोना मसूरी और गोविंद भोग चावल मुख्य हैं। इसमें से गोविंद भोग चावल की कीमत बासमती चावल से ज्यादा होती है। देश में गैर-बासमती चावल की पैदावार के कुल 60 प्रतिशत की भारत में ही खपत होती है।

फसल का नहीं मिलेगा उचित मूल्यः किसान

सचिन शर्मा के मुताबिक, पिछले साल सरकार ने गैर-बासमती चावल की खूब खरीदारी की थी। उन्हें उचित मूल्य थी दिया था। जिसको देखते हुए बड़ी संख्या में किसान इसकी पैदावार कर रहे हैं, लेकिन सरकार ने अचानक निर्यात पर रोक लगा दी। किसानों को अब उनकी फसल का उचित मूल्य नहीं मिल सकेगा। उनका कहना है कि इस तरह के फैसले लेते वक्त सरकार को व्यापारियों से जरूर बात करनी चाहिए। जिससे फैसले के नफा-नुकसान का सही आकलन किया जा सके।

फिजिक्स वाला (पीडब्ल्यू) ने पीडब्ल्यू इंस्टीट्यूट ऑफ इनोवेशन शुरू किया

कंप्यूटर साइंस और एआई के चार वर्षीय रेजीडेंशिल प्रोग्राम

इंदौर। आईपीटी नेटवर्क

तकनीकी शिक्षा में भारत के अग्रणी तकनीकी शिक्षण संस्थान फिजिक्स वाला (पीडब्ल्यू) ने पीडब्ल्यू इंस्टीट्यूट ऑफ इनोवेशन शुरू किया है। इस इंस्टीट्यूट में कंप्यूटर साइंस और एआई का चार वर्षीय रेजीडेंशिल प्रशिक्षण दिया जाएगा। भारतीय सॉफ्टवेयर इंडस्ट्री की अहम चुनौतियों के समाधान के उद्देश्य से इंस्टीट्यूट को भारत की सिलिकॉन वैली, बैंगलोर में खोला गया है। इस कोर्स को इंडस्ट्री के लिए जरूरी कौशल से परिपूर्ण करने और प्रोफेशनल्स की मांग एवं आपूर्ति के अंतर को पाटकर उन्हें भविष्य की जरूरतों के लिए तैयार करने के अनुरूप बनाया गया है।

चार साल के रेजीडेंशिल प्रोग्राम में शिक्षा के अनोखे और समग्र दृष्टिकोण के साथ प्रशिक्षित किया जाएगा। इंस्टीट्यूट के पास अनुभवी शिक्षक हैं। साथ ही शीर्ष कंपनियों के लीडर्स मेंटर के रूप में उपलब्ध हैं। इंडस्ट्री के काबिल कोर्स हैं। 100 प्रतिशत छात्रवृति की व्यवस्था है। वास्तविक दुनिया के लिए कारगर प्रोजेक्टस हैं। इन सारी सुविधाओं के साथ छात्रों को अपने प्रोफेशनल जीवन की सफल यात्रा के लिए तैयार किया जाएगा। व्यक्तिगत मार्गदर्शन, चार व्यापक इंटर्नशिप, नेटवर्किंग के अवसर, ग्लोबल एक्सपोज़र और एक अत्याधुनिक परिसर इस कार्यक्रम को और भी प्रभावशाली बनाते हैं।

कोर्स को बाजार के प्रौद्योगिकी रुझानों के अनुरूप बनाया गया है। छात्रों को किसी प्रमुख संस्थान के समानांतर स्नातक की डिग्री हासिल करने का अवसर भी उपलब्ध रहेगा। यह डिग्री छात्रों को भारत या विदेश में आगे की शिक्षा के अवसर तलाशने और उन्हें प्रतिस्पर्धी परीक्षाओं में बैठने के योग्य बनाती है।

पीडब्ल्यू के सीआईओ और पीडब्ल्यू आईओआई के अध्यक्ष विश्व मोहन ने कहा,'यह वास्तव में चिंताजनक है कि भारतीय सॉफ्टवेयर इंडस्ट्री में तेजी से वृद्धि के बावजूद, भारतीय इंजीनियरिंग स्नातकों की रोजगार दर अपेक्षाकृत कम बनी हुई है। पिछले कुछ वर्षों में सिर्फ मामूली सुधार हुआ है। इसके अलावा, कुशल एआई और डेटा विज्ञान पेशेवरों की मांग-आपूर्ति का अंतर बढ़ा है। इसको ध्यान में रखते हुए शिक्षण के तरीके में व्यापक बदलाव की जरूरत है। पीडब्ल्यू आईओआई का लक्ष्य तेजी से विकसित हो रहे जॉब मार्किट के लिए पेशेवरों को रोजगार योग्य और प्रभावी कौशल के साथ सशक्त बनाकर इस मुद्दे का समाधान करना है।'

पीडब्ल्यू स्किल्स के सीईओ सुधांशु कुमार ने कहा, 'उद्योग-केंद्रित कोर्स के साथ वास्तविक दुनिया के अनुभव को जोड़कर, हमारा लक्ष्य हमारे छात्रों की तत्काल जरूरतों को पूरा करना और भविष्य में नौकरी के अवसरों में मांग और आपूर्ति के बीच अंतर को पाटना है। कोर्स के अंत में, संस्थान का प्लेसमेंट सेल छात्रों को नौकरी दिलाने में मदद करेगा। प्लेसमेंट के लिए टाटा आईक्यू, सीमेंस, लीडस्क्वेयर, एसएपी, ओरेकल, केपीएमजी, अमेज़ॅन सहित 500 से अधिक हायरिंग पार्टनर के साथ साझेदारी की गई है। इससे पहले, पीडब्ल्यू स्किल्स ने 1500 से अधिक शिक्षार्थियों को 22 लाख रुपए सालाना के औसत वेतन वाली प्लेसमेंट कराया है। अधिकतम सालाना वेतन 50 लाख रुपये था।

OPPO ने लांच किया नया Reno10 5G टेलीफ़ोटो कैमरा के साथ

इंदौर। आईपीटी नेटवर्क

विश्व के उभरते हुए स्मार्ट डिवाइस ब्रांड OPPO ने घोषणा की है कि उसका Reno10 5G मात्र 32,999 रुपये में बिक्री के लिए उपलब्ध है। यह हैंडसेट रात 12 बजे से OPPO ई-स्टोर के साथ - साथ फ्लिपकार्ट और मेनलाइन रिटेल आउटलेट्स पर भी मिल सकेगा। अल्ट्रा-स्लिम बॉडी वाला Reno10 5G आइस ब्लू और सिल्वर ग्रे रंग में उपलब्ध होगा। यह एक 3डी कर्व्ड बॉडी के साथ वज़न में हल्का और पकड़ने में आसान होगा। इसमें बॉर्डरलेस और इमर्सिव व्यूइंग अनुभव के लिए 120हर्ट्ज़ का 6.7 इंच एमोलेड डिस्प्ले और 93% स्क्रीन-टू-बॉडी अनुपात दिया गया है। इसका डिस्प्ले ड्रैगनट्रेल स्टार 2 है और बैक में मजबूत पॉलीकार्बोनेट बॉडी है। इसकी 2412×1080px स्क्रीन जो 1 बिलियन कलर्स प्रदान करती है। यह 950nits की HDR ब्राइटनेस के साथ आता है, जिससे धूप में भी साफ और स्पष्ट विज़ुअल मिलते हैं। साथ ही, आपको बेहतर सराउंड साउंड अनुभव के लिए इसमें डिराक द्वारा परीक्षण किए गए रियल ओरिजिनल साउंड टेक्नोलॉजी के साथ ड्युअल स्टीरियो स्पीकर भी हैं।

Reno10 5G एक शक्तिशाली कैमरा सिस्टम के साथ आता है, जिसमें 64MP OV64B अल्ट्रा-क्लियर मुख्य कैमरा, 32MP IMX709 टेलीफोटो पोर्ट्रेट कैमरा, 8MP IMX355 112° अल्ट्रा-वाइड कैमरा और 32MP OV32C अल्ट्रा-क्लियर सेल्फी कैमरा भी शामिल है। इसमें रेनो श्रृंखला में अब तक की सबसे शक्तिशाली 5000mAh की बैटरी दी गई है, तथा 67वॉट का सुपरवूक चार्जर डिवाइस को 47 मिनट में 100%

चार्ज कर देता है। ज़्यादातर गतिशील रहने वाले लोग केवल 30 मिनट में हैंडसेट को 70% तक चार्ज कर सकते हैं।

इसके अलावा, OPPO का पुरस्कार विजेता बैटरी हेल्थ इंजन (बीएचई) करंट और वोल्टेज को समझदारी से कंट्रोल करते हुए रियल टाइम मॉनिटरिंग के साथ चार्जिंग का जीवनकाल बढ़ा देता है। इससे हैंडसेट की बैटरी 1,600 चार्ज चक्रों के बाद भी अपनी 80% क्षमता बनाकर रखती है और चार साल से ज़्यादा समय तक चलती है।

डायरेक्टोरेट जनरल ऑफ ट्रेनिंग ने एडब्लूएस इंडिया के साथ किया गठबंधन

नई दिल्ली। आईपीटी नेटवर्क

डायरेक्टोरेट जनरल ऑफ ट्रेनिंग कौशल विकास एवं उद्यमिता मंत्रालय के अंतर्गत एमेजॉन वेब सर्विसेज के साथ गठबंधन कर रहा है, जिसके अंतर्गत विद्यार्थियों को क्लाउड कंप्यूटिंग, डेटा एनोटेशन, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, और मशीन लर्निंग में कौशल प्रदान किया जाएगा। ताकि उनकी क्षमताओं व रोजगार की योग्यताओं को बढ़ाया जा सके। इस अभियान से डीजीटी के अंतर्गत संस्थानों में नामांकित विद्यार्थियों को लाभ मिलेगा। डीजीटी भारत में लगभग 15,000 औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों, और 33 नेशनल स्किल ट्रेनिंग संस्थानों के विस्तृत नेटवर्क द्वारा दीर्घकालिक संस्थागत कौशल प्रशिक्षण का क्रियान्वयन करने के लिए जिम्मेदार एपेक्स संस्थान है।

सुनील पीपी, लीड एजुकेशन, स्पेस, नॉन-प्रॉफिट्स, चैनल्स एंड अलायंसेज, एडब्लूएस इंडिया प्राईवेट लिमिटेड ने कहा, "क्लाउड कंप्यूटिंग, एआई, एमएल लगभग हर उद्योग में परिवर्तन ला रहे हैं इसलिए इनोवेशन लाने और देश की प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ाने के लिए इन टेक्नॉलॉजीज में कुशल कार्यबल का विकास करना महत्वपूर्ण है। लर्नर्स एवं एजुकेटर्स को उद्योग के लिए उपयोगी एडब्लूएस आधारित करिकुलम और लर्निंग के संसाधन प्रदान करके हम बड़े स्तर पर शिक्षा में निवेश कर रहे हैं, और भारत में भविष्य का डिजिटल कार्यबल विकसित कर रहे हैं।" एमएसडीई के सेक्रेटरी श्री अतुल कुमार तिवारी ने कहा हम विद्यार्थियों को अत्यधिक मांग वाली, विकसित होती हुई टेक्नॉलॉजी में प्रशिक्षण उपलब्ध करा रहे हैं, और उनके लिए नए अवसर उत्पन्न कर उनकी रोजगार की योग्यता बढ़ा रहे हैं। एडब्लूएस के साथ इस अभियान द्वारा हमें खुशी है कि आईटीआई और एनएसटीआई के विद्यार्थियों को क्लाउड कंप्यूटिंग, डेटा एनोटेशन, एआई और एमएल जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में इन-डिमांड कौशल और हैंड्स-ऑन अनुभव का लाभ मिल सकेगा। इन टेक्नॉलॉजीज में फैकल्टी को प्रशिक्षित करने के लिए एडब्लूएस का सहयोग बहुमूल्य होगा, और उन्हें अध्ययन के बेहतर परिणाम देने में समर्थ बनाएगा।

स्वामी/मुद्रक/प्रकाशक सचिन बंसल द्वारा अपनी दुनिया प्रिंटर्स, 13, प्रेस काम्पलेक्स, ए.बी. रोड, इंदौर से मुद्रित एवं 18, सेक्टर-डी-2, सांवेर रोड, इंडस्ट्रीयल एरिया, जिला इंदौर (म.प्र.) से प्रकाशित। संपादक- सचिन बंसल

सूचना/चेतावनी- इंडियन प्लास्ट टाइम्स अखबार के पूरे या किसी भी भाग का उपयोग, पुनः प्रकाशन, या व्यावसायिक उपयोग बिना संपादक की अनुमति के करना वर्जित है। अखबार में छपे लेख या विज्ञापन का उद्देश्य सूचना और प्रस्तुतिकरण मात्र है। अखबार किसी भी प्रकार के लेख या विज्ञापन से किसी भी संस्थान की सिफारिश या समर्थन नहीं करता है। पाठक किसी भी व्यावसायिक गतिविधि के लिए स्वविवेक से निर्णय करें। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र इंदौर, मप्र रहेगा।